Annexure 'B'

पाठ्यक्रम
हिंदी (केन्द्रिक) कोड सं० 302
कक्षा-12 (2014)

प्रस्तावना

दसवीं कक्षा तक हिंदी का अध्ययन करने वाला विद्यार्थी समझते हुए पढ़ने व सुनने के साथ–साथ हिंदी में सोचने और उसे मौखिक एवं लिखित रूप में व्यक्त कर पाने की सामान्य दक्षता अर्जित कर चुका होता है। उच्चतर माध्यमिक स्तर पर आने के बाद इन सभी दक्षताओं को सामान्य से ऊपर उस स्तर तक ले जाने की दरकार होती है, जहाँ भाषा का इस्तेमाल भिन्न–भिन्न व्यवहार–क्षेत्रों की मांगों के अनुरूप किया जा सके। केंद्रिक (आधार) पाठ्यक्रम साहित्यिक बोध के साथ–साथ भाषाई दक्षता के विकास को ज्यादा अहमियत देता है। यह पाठ्यक्रम उन विद्यार्थियों के लिए उपयोगी साबित होगा, जो आगे विश्वविद्यालय में अध्ययन करते हुए हिंदी को एक विषय के रूप में पढ़ेंगे या विज्ञान/समाजविज्ञान के किसी विषय को हिंदी माध्यम से पढ़ना चाहेंगे। यह उनके लिए भी उपयोगी साबित होगा, जो उच्चतर माध्यमिक स्तर की शिक्षा के बाद किसी तरह के रोज़गार में लग जाएंगे। वहां कामकाजी हिंदी का आधारभूत अध्ययन काम आएगा। जिन विद्यार्थियों की दिलचस्पी जनसंचार माध्यमों में होगी, उनके लिए यह पाठ्यक्रम एक आरंभिक पृष्ठभूमि निर्मित करेगा। इसके साथ ही यह पाठ्यक्रम सामान्य रूप से तरह–तरह के साहित्य के साथ विद्यार्थियों के संबंध को सहज बनाएगा। विद्यार्थी भाषिक अभिव्यक्ति के सूक्ष्म एवं जटिल रूपों से परिचित हो सकेंगे, वे यथार्थ को अपने विचारों में व्यवस्थित करने के साधन के तौर पर भाषा का अधिक सार्थक उपयोग कर पाएँगे और उनमें जीवन के प्रति मानवीय संवेदना एवं सम्यक् दृष्टि का विकास हो सकेगा।

उद्देश्य

- विभिन्न माध्यमों और विधाओं के लिए उपयुक्त भाषा प्रयोग की इतनी क्षमता उनमें विकसित हो चुकी होगी कि वे स्वयं इससे जुड़े उच्चतर पाठ्यक्रमों को समझ सकेंगे।
- सामाजिक हिंसा की भाषिक अभिव्यक्ति की समझ का विकास।
- भाषा के अंदर सक्रिय सत्ता संबंध की समझ का विकास।
- सृजनात्मक साहित्य को सराह पाने और उसका आनंद उठाने की क्षमता का विकास तथा भाषा में सौंदर्यात्मकता उत्पन्न करने वाली सृजनात्मक युक्तियों की संवेदना का विकास।
- विद्यार्थियों के भीतर सभी प्रकार की विविधताओं (धर्म, जाति, जेंडर, क्षेत्र भाषा संबंधी) के प्रति सकारात्मक एवं विवेकपूर्ण रवैये का विकास।

- पठन–सामग्री को भिन्न–भिन्न कोणों से अलग–अलग सामाजिक, सांस्कृतिक चिंताओं के परिप्रेक्ष्य में देखने का अभ्यास कराना तथा नज़रिये की एकांगिकता के प्रति आलोचनात्मक दृष्टि का विकास करना।

- विद्यार्थी में स्तरीय साहित्य की समझ और उसका आनंद उठाने की क्षमता का विकास, उसमें साहित्य को श्रेष्ठ, बताने वाले तत्वों की संवेदना का विकास।

- विभिन्न ज्ञानानुशासनों के विमर्श की भाषा के रूप में हिंदी की विशिष्ट प्रकृति और उसकी क्षमताओं का बोध।

- कामकाजी हिंदी के उपयोग के कौशल का विकास।

- संचार माध्यमों (प्रिंट और इलेक्ट्रोनिक) में प्रयुक्त हिंदी की प्रकृति से परिचय और इन माध्यमों की मांगों के अनुरूप मौखिक एवं लिखित अभिव्यक्ति का विकास।

- विद्यार्थी में किसी भी अपरिचित विषय से संबंधित प्रासंगिक जानकारी के स्रोतों का अनुसंधान और उन्हें व्यवस्थित ढंग से उनकी मौखिक और लिखित प्रस्तुति करने की क्षमता का विकास।

शिक्षण–युक्तियाँ

- कुछ बातें इस स्तर पर हिंदी शिक्षण के लक्ष्यों के संदर्भ में सामान्य रूप से कही जा सकती हैं। एक तो यही कि कक्षा में दबाव एवं तनाव मुक्त माहौल होने की स्थिति में ही ये लक्ष्य हासिल किए जा सकते हैं। चूँकि इस पाठ्यक्रम में तैयारशुदा उत्तरों को कंठस्थ कर लेने की कोई अपेक्षा नहीं है, इसलिए चीजों को समझने और उस समझ के आधार पर उत्तर को शब्दबद्ध करने की योग्यता विकसित करना ही हमारा काम है। इस योग्यता के विकास के लिए कक्षा में विद्यार्थियों और शिक्षक के बीच निर्बाध संवाद जरूरी है। विद्यार्थी अपनी शंकाओं और उलझनों को जितना ही अधिक व्यक्त करेंगे, उतना ही ज्यादा निखार उनमें आ पाएगा।

- भाषा की कक्षा को समाज में मौजूद विभिन्न प्रकार के द्वंद्वों पर बातचीत का मंच बनाना चाहिए। उदाहरण के लिए संविधान में किसी शब्द विशेष के प्रयोग पर मनाही को चर्चा का विषय बनाया जा सकता है। यह समझ जरूरी है कि छात्रों को सिर्फ सकारात्मक पाठ देने से काम नहीं चलेगा बल्कि उन्हें समझाकर भाषिक यथार्थ का सीधे सामना करवाने वाले पाठों से परिचय होना जरूरी है।

- शंकाओं और उलझनों को रखने के अलावा भी कक्षा में विद्यार्थियों को अधिक–से–अधिक बोलने के लिए प्रेरित किया जाना जरूरी है। उन्हें यह अहसास कराया जाना चाहिए कि वे पठित सामग्री पर राय देने का अधिकार और उसकी काबिलियत रखते हैं। उनकी राय को तवज्जों देने और उसे बेहतर तरीके से पुनर्प्रस्तुत करने की अध्यापकीय शैली यहां बहुत उपयोगी होगी।

- विद्यार्थियों को संवाद में शामिल करने के लिए यह भी जरूरी होगा कि उन्हें एक नामहीन समूह न मानकर अलग–अलग व्यक्तियों के रूप में अहमियत दी जाए। शिक्षक को अक्सर एक कुशल संयोजक की भूमिका में स्वयं को देखना होगा, जो किसी भी इच्छुक व्यक्ति को संवाद का भागीदार बनने से वंचित नहीं रखता, उसके कच्चे–पक्के वक्तव्य को मानक भाषा–शैली में ढाल कर उसे एक आभा दे देता है और मौन को अभिव्यंजना मान बैठे लोगों को मुखर होने पर बाध्य कर देता है।

- अप्रत्याशित विषयों पर चिंतन करने और सोचे हुए मौखिक व लिखित अभिव्यक्ति करने की योग्यता का विकास शिक्षक के सचेत प्रयास से ही संभव है। इसके लिए शिक्षक को एक निश्चित अंतराल पर नए–नए विषय प्रस्तावित कर लेख एवं अनुच्छेद लिखने तथा संभाषण करने के लिए पूरी कक्षा को प्रेरित करना होगा। यह अभ्यास ऐसा है जिसमें विषयों की कोई सीमा तय नहीं की जा सकती। विषय की असीम संभावना के बीच शिक्षक यह सुनिश्चित कर सकता है कि उसके विद्यार्थी किसी निबंध–संकलन या कुंजी से तैयारशुदा सामग्री को उतार भर न ले। तैयारशुदा सामग्री के लोभ से, बाध्यतावश ही सही, मुक्ति पाकर विद्यार्थी नए तरीके से सोचने और उसे शब्दबद्ध करने के यत्न में सन्नद्ध होंगे। मौखिक अभिव्यक्ति पर भी विशेष ध्यान देने की ज़रूरत है, क्योंकि भविष्य में साक्षात्कार, संगोष्ठी जैसे मौकों पर यही योग्यता विद्यार्थी के काम आती है। इसके अभ्यास के सिलसिले में शिक्षक को उचित हावभाव, मानक उच्चारण, पॉज, बलाघात, हाजिरजवाबी इत्यादि पर खास बल देना होगा।

- मध्यकालीन काव्य की भाषा के मर्म से विद्यार्थी का परिचय कराने के लिए ज़रूरी होगा कि किताबों में आए काव्यांशों की संगीतबद्ध प्रस्तुतियों के ऑडियो–वीडियो कैसेट या सी.डी. तैयार की जाएंगी। अगर आसानी से कोई गायक/गायिका मिले तो कक्षा में मध्यकालीन साहित्य के अध्यापन–शिक्षण में उससे मदद ली जानी चाहिए।

- वृत्तचित्रों और फीचर फिल्मों को शिक्षण सामग्री के तौर पर इस्तेमाल करने की ज़रूरत है। इनके प्रदर्शन के क्रम में इन पर लगातार बातचीत के ज़रिए सिनेमा के माध्यम से भाषा के प्रयोग की

विशिष्टता की पहचान कराई जा सकती है और हिंदी की अलग–अलग छटा दिखाई जा सकती है। विद्यार्थियों को स्तरीय परीक्षा करने को भी कहा जा सकता है।

- कक्षा में सिर्फ एक पाठ्यपुस्तक की भौतिक उपस्थिति से बेहतर यह है कि शिक्षक के हाथ में तरह–तरह की पाठ्यसामग्री को विद्यार्थी देख सकें और शिक्षक उनका कक्षा में अलग–अलग मौकों पर इस्तेमाल कर सकें।

- भाषा लगातार ग्रहण करने की क्रिया में बनती है, इसे प्रदर्शित करने का एक तरीका यह भी है कि शिक्षक खुद यह सिखा सकें कि वे भी शब्दकोश, साहित्यकोश, संदर्भग्रंथ की लगातार मदद ले रहे हैं। इससे विद्यार्थियों में इसका इस्तेमाल करने को लेकर तत्परता बढ़ेगी। अनुमान के आधार पर निकटतम अर्थ तक पहुंचकर संतुष्ट होने की जगह वे सही अर्थ की खोज करने का अर्थ समझा जाएंगे। इससे शब्दों की अलग–अलग रंगत का पता चलेगा और उनमें संवेदनशीलता बढ़ेगी। वे शब्दों के बारीक अंतर के प्रति और सजग हो पाएंगे।

- कक्षा–अध्यापन के पूरक कार्य के रूप में सेमिनार, ट्यूटोरियल कार्य, समस्या–समाधान कार्य, समूह चर्चा, परियोजना, कार्य, स्वाध्याय आदि पर बल दिया जाना चाहिए। पाठ्यक्रम में जनसंचार माध्यमों से संबंधित अंशों को देखते हुए यह जरूरी है कि समय–समय पर इन माध्यमों से जुड़े व्यक्तियों और विशेषज्ञो को भी स्कूल में बुलाया जाए तथा उनकी देख–रेख में कार्यशालाएं आयोजित की जाएं।

हिंदी (केंद्रिक)

कोड सं. 302

कक्षा–12

			अंक
(क)	अपठित बोध (गद्यांश और काव्यांश–बोध)	15+5	20
(ख)	रचनात्मक लेखन एवं जन–संचार माध्यम • **अभिव्यक्ति और माध्यम**		
	(जनसंचार पत्रकारीय लेखा, रिपोर्ट, आलेख, फीचर–लेखन)	5+5+5+5+5	25
(ग)	• निर्धारित पुस्तकें :		
	• **आरोह** (भाग–2) (काव्यांश–20 गद्यांश–20)		40
	• **वितान** (भाग–2)		15
			100

क	**अपठित बोध :**		**20**
1.	अपठित काव्यांश पर आधारित पाँच लघूत्तरात्मक प्रश्न	(1×5)	05
2.	अपठित गद्यांश पर आधारित बोध, प्रयोग, रचनांतरण, शीर्षक आदि पर लघूत्तरात्मक प्रश्न		15
ख	**रचनात्मक लेखन एवं जन–संचार माध्यम:**		**25**
3.	निबंध (किसी एक विषय पर)		05
4.	कार्यालय पत्र (विकल्प सहित)		05
5.	(अ) जनसंचार माध्यम, विविध माध्यमों के लिए लेखन, पत्रकारीय लेखन आदि पर पाँच अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न पूछें जाऐंगें	(1×5)	05
	(आ) आलेख (किसी एक विषय पर)		05
6.	फीचर लेखन (जीवन–संदर्भो से जुड़ी घटनाओं और स्थितियों पर फीचर लेखन–विकल्प सहित)		05
ग	**आरोह भाग–2 (काव्य –भाग और गद्य–भाग)**	**(20+20)**	**40**
7.	**दो** काव्यांशों में से किसी **एक** पर अर्थग्रहण के चार/पाँच प्रश्न		08
8.	काव्यांशं के सौंदर्यबोध पर **दो** काव्यांशो में विकल्प दिया जाएगा तथा किसी एक काव्यांश के **तीनो** प्रश्नों के उत्तर देने होंगे।		06
9.	कविताओं की विषय–वस्तु से संबंधित **तीन** में से **दो** लघूत्तरात्मक प्रश्न	(3+3)	06
10.	**दो** में से किसी **एक** गद्यांश पर आधारित अर्थ–ग्रहण के **चार** प्रश्न	(2+2+2+2)	08
11.	पाठों की विषय वस्तु पर आधारित **पांच** में से **चार** बोधात्मक प्रश्न	(3+3+3+3)	12

पूरक पाठ्य पुस्तक : वितान भाग 2		**15**
12. पाठों की विषयवस्तु पर आधारित **तीन** में से **दो** बोधात्मक प्रश्न	(3+3)	06
13. विचार/संदेश पर आधारित **तीन** में से **दो** लघूत्तरात्मक प्रश्न	(2+2)	04
14. विषयवस्तु पर आधारित **दो** में से **एक** निबंधात्मक प्रश्न		05

(यह प्रश्न छात्रों के अनुभवों व संवेदनशीलता परखने के लिए मूल्य परक प्रश्न होगा)

निर्धारित पुस्तकें

(i) **आरोह भाग–2** एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा प्रकाशित

(ii) **वितान भाग–2** एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा प्रकाशित

(iii) **अभिव्यक्ति और माध्यम** एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा प्रकाशित

आदर्श प्रश्न पत्र - 2014

हिन्दी 'केंद्रिक'

कक्षा - XII

समय : 3 घण्टे **अधिकतम अंक : 100**

खण्ड- क

1 **निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–** 15

बुद्ध ने हिन्दुओं के सांस्कृतिक तत्वों का उपयोग धर्म के कुछ आचारों को शुद्ध करने के लिए किया उन्हें नष्ट करने के लिए नहीं। वह अपूर्ण को पूर्ण बनाने के लिए पृथ्वी पर अवतरित हुआ। वह हमारे लिए, इस देश में समयानुकूल धार्मिक परंपरा का एक अलौकिक प्रतिनिधि माने गए। उन्होंने भारतभूमि पर अपने अमिट पद चिह्न छोड़े। इस देश की सारी रूढ़ियों के बावजूद भी आज देश की आत्मा पर बुद्ध की छाप है। यहाँ उनकी शिक्षा हमारी संस्कृति में समाविष्ट होकर उसका आवश्यक अंश बन गई है। बुद्ध द्वारा 'बाह्मण' और 'भ्रमण' एक-से माने गए और ये दोनों परंपराएँ धीरे-धीरे धुल-मिल गईं। यही कारण है कि बुद्ध को आधुनिक हिन्दु धर्म का निर्माता माना जाता है।

मानव जाति ने बुद्ध के महान चरित्र के रूप में मानो अपने अस्तित्व की सार्थकता को प्राप्त किया है। बुद्ध चाहते थे कि एक नए प्रकार का स्वतंत्र मनुष्य विकसित हो जो सब पूर्व मान्यताओं से स्वतंत्र हो, जो अपना भविष्य स्वयं बनाए, जो अपना दीपक स्वयं बने। बुद्ध के विचार संकुचित मान्यताओं और राष्ट्रीय सीमाओं से परे थे। आज दुनिया के सभी मामलों में जो अव्यवस्था जान पड़ती है, वह मनुष्यों की आत्मा के भीतर की अव्यवस्था की प्रतीक है, विभिन्न देशों एवं कालखंडों में खंडित मानवता का दुष्परिणाम ह आज का मानव एक प्रकार की आत्मिक थकान, वैयक्तिक और सामूहिक अहंभाव की वृद्धि से पीड़ित है।

बुद्ध ने स्पष्ट किया कि शांति के लिए आन्तरिक सामंजस्य और आत्मिक संतुलन आवश्यक है। जो आत्मा संतुलित है, जो स्वतंत्र है, वह अपने प्रेम पर कोई बंधन नहीं लगाती, वह मानव मात्र में एक दैवी स्फुलिंग देखती है और मानव जाति के कल्याण के लिए आत्मार्पण करने को प्रस्तुत रहती है। वह पापाचरण एवं अन्य सब प्रकार के भय-समूह से मुक्त रहती है।

(क) बुद्ध ने किस धर्म के किन आचारों को शुद्ध करने के लिए सांस्कृतिक तत्वों का उपयोग किया? 2

(ख) बुद्ध के पदचिह्नों को अमिट क्यों कहा गया है? 2

(ग) 'ब्राह्मण' और 'भ्रमण' परम्परा से लेखक का क्या अभिप्राय है? 2

2

(घ) बुद्ध को आधुनिक हिन्दु धर्म का निर्माता क्यों कहा गया है? 1

(ङ) बुद्ध किस प्रकार के मनुष्य को विकसित करना चाहते थे? 1

(च) आज की दुनिया की अव्यवस्था के स्वरूप को अपने शब्दों में समझाइए। 1

(छ) आज के मानव की आत्मिक थकान क्या है? 1

(ज) स्वतंत्र और संतुलित आत्मा की क्या उपयोगिता है? 1

(झ) गद्यांश के लिए एक उपयुक्त शीर्षक दीजिए। 1

(ण) निम्नलिखित में स्पष्ट कीजिए–

अवतरित - प्रत्यय

समाविष्ट - उपसर्ग 1

(ढ) मिश्र वाक्य में बदलिए–

'वह अपूर्ण को पूर्ण बनाने के लिए
पृथ्वी पर अवतरित हुए।'

2 निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए: 5

हमने
पेड़ों के बदले
कारखाने उगाये थे
कि हमारे हाथ बढ़ जाएँ
हमें भेटें
अपनाएँ
हम अपनों के निकटतर हो जाएँ।
हमें क्या मालूम था
कि ये सभ्यता के झंडे
जंगल हो जाएँगे।
और हम इनमें खो जाएँगे;
कि आदमी
आदमी को देखने को तरसेगा,
सामने देखेगा
तो भी नहीं चीन्हेगा
बहुत हुआ
तो गुर्राएगा
भौंकेगा
गाली बन बरसेगा।

आशय स्पष्ट कीजिए–
'पेड़ों के बदले कारख़ाने उगाए थे।'

(ख) कारखाने उगाने का क्या उद्देश्य था?

(ग) कारखाने लगाने के क्या दुष्परिणाम हुए?

(घ) 'गुर्राएगा' 'भौंकेगा' शब्दों के माध्यम से कवि किसकी, कैसी मानसिक स्थिति को प्रस्तुत करना चाहता है?

(ङ) काव्यांश के कथ्य को अपने शब्दों में प्रस्तुत कीजिए।

खण्डः - ख

3 निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर निबंध लिखिए:- 5

(क) सर्वत्र पैसे की हाय-हाय

(ख) आतंकवाद की समस्या

(ग) राष्ट्रनिर्माण में नारी की भूमिका

(घ) लड़कियों की घटती जनसंख्या

4 युवकों में नशाखोरी की प्रवृत्ति निरंतर बढ़ती जा रही है। किसी प्रतिष्ठित समाचार-पत्र के संपादक को पत्र लिखकर इस समस्या पर अपने विचार व्यक्त कीजिए और कोई समाधान भी सुझाइए। 5

अथवा

उत्तर रेलवे मुख्यालय, नई दिल्ली के सतर्कता अधिकारी को पत्र लिखकर रेलवे टिकिट के आरक्षण केन्द्रों पर बढ़ती अव्यवस्था के प्रति उनका ध्यान आकृष्ट कीजिए।

5 निम्नलिखित के उत्तर संक्षेप में दीजिए– **5**

(क) (i) जनसंचार का आधुनिकम माध्यम

(ii) खोजपरक पत्रकारिता

(iii) मुद्रित माध्यम की उल्लेखनीय विशेषता

(iv) उलटा पिरामिड शैली

(v) फ्रीलांसर पत्रकार

(ख) निम्नलिखित में से **किसी एक** विषय पर एक आलेख लिखिए। 5

(1) शहरी परिवारों में बुजुर्गों की स्थिति

(2) नौकरी पेशा महिलाओं का जीवन

6 ‘वेलेंटाइन डे मनाने का बढ़ता चलन’ **अथवा** ‘ग्राम्य जीवन की चुनौतियाँ’ विषय पर एक फीचर लिखिए। 5

खंड:- ग

7 **निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–** **6**

भरत बाहु बल सील गुन प्रभु पद प्रीति अपार।
मन महुं जात सराहत मुनि पुनि पवनकुमार।।

(क) काव्यांश की भाषा कौन-सी है? उसकी किसी एक विशेषता का उल्लेख कीजिए।

(ख) अनुप्रास अलंकार के दो उदाहरण चुनकर लिखिए।

(ग) पद्यांश में वर्णित भरत के व्यक्तित्व की आन्तरिक विशेषताओं को स्पष्ट कीजिए।

अथवा

आँगन में लिए चाँद के टुकड़े को खड़ी
हाथों में झुलाती है उसे गोद भरी
रह-रह के हवा में जो लोका देती है
गूँज उठती है खिलखिलाते बच्चे की हँसी।

(क) काव्यांश की दो भाषागत विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

(ख) काव्यांश के भावसौन्दर्य पर टिप्पणी कीजिए।

(ग) पद्यांश के अलंकार वैशिष्ट्य को स्पष्ट कीजिए।

8 **प्रस्तुत पद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।** **8**

कविता एक खिलना है फूलों के बहाने
कविता का खिलना भला फूल क्या जाने!
बाहर भीतर
इस घर, उस घर
बिना मुरझाए महकने के माने
फूल क्या जाने?
कविता एक खेल है बच्चों के बहाने
बाहर भीतर
यह घर, वह घर
सब घर एक कर देने के माने
बच्चा ही जाने।

(क) कविता फूल की तरह खिलकर भी उससे श्रेष्ठतर क्यों हैं?

(ख) ‘बाहर भीतर इस घर, उस घर’ शब्द समूह के प्रयोग सौन्दर्य को स्पष्ट कीजिए।

(ग) कविता का खेल बच्चों के खेल की भाँति क्यों है?

(घ) 'फूल' और 'बच्चे के खेल' के माध्यम से कविता की विशिष्टता को अपने शब्दों में स्पष्ट कीजिए।

अथवा

किसबी, किसान-कुल, बनिक, भिखारी, भाट,
चाकर, चपल नट, चोर, चार, चेटकी।
पेट को पढ़त, गुनगढ़त, चढ़त गिरि,
अटत गहन-गन अहन अखेटकी।।
ऊँचे-नीचे करम, धरम अधरम करि,
पेट ही को पचत, बेचत बेटा-बेटकी।
तुलसी बुझाई एक राम घनस्याम ही ते',
आगि बाड़वागितें बड़ी है आगि पेटकी।।

(क) कवि ने कविता में अपने समय की किन-किन दशाओं का वर्णन किया है?

(ख) मनुष्यों को किसके लिए किस-किस प्रकार के कर्म करने पड़ते हैं?

(ग) कविता में किसको किससे बढ़कर बताया गया है और क्यों?

(घ) कविता में चित्रित समस्या का निदान कहाँ माना है?

9 निम्नलिखित में से किन्हीं <u>दो</u> प्रश्नों के उत्तर दीजिए– **6**

(क) 'सहर्ष स्वीकारा है' कविता का संबोध्य कौन है? वह कवि के सामने नहीं है; फिर भी कवि को उसकी उपस्थिति का आभास क्यों होता है?

(ख) उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए कि 'उषा' कविता सूर्योदय के क्षणों में परिवर्तित प्रकृति का सुरम्य शब्द-चित्र प्रस्तुत करती है।

(ग) 'छोटा मेरा खेत' कविता में खेती के रूपक में कविता की संरचना के प्रत्येक चरण को सटीक रूप में प्रस्तुत किया गया है– सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

10 निम्नलिखित गद्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए– **8**

जाति-प्रथा को यदि श्रम - विभाजन मान लिया जाए, तो यह स्वाभाविक विभाजन नहीं है, क्योंकि यह मनुष्य की रुचि पर आधारित नहीं है। कुशल व्यक्ति या सक्षम-श्रमिक-समाज का निर्माण करने के लिए यह आवश्यक है कि हम व्यक्तियों की क्षमता इस सीमा तक विकसित करें, जिससे वह अपना पेशा या कार्य का चुनाव स्वयं कर सके। इस सिद्धांत के विपरीत जाति-प्रथा का दूषित सिद्धान्त यह है कि इससे मनुष्य के प्रशिक्षण अथवा उसकी निजी क्षमता का विचार किए बिना, दूसरे ही दृष्टिकोण जैसे माता-पिता के सामाजिक स्तर के अनुसार, पहले से ही अर्थात गर्भधारण के समय से ही मनुष्य का पेशा निर्धारित कर दिया जाता है।

(क) जाति-प्रथा श्रम - विभाजन का आधार क्यों नहीं मानी जा सकती?

(ख) सक्षम श्रमिक समाज की संरचना कैसे की जा सकती है?

(ग) जाति - प्रथा किस आधार पर पेशे का निर्धारण करती है?

(घ) गद्यांश से लेखक के किस विचार की जानकारी मिलती है।

अथवा

कुछ देर चुप रही जीजी, फिर मेरे मुँह में भहरी डालती हुई बोलीं, ''देख बिना त्याग के दान नहीं होता। अगर तेरे पास लाखों - करोड़ों रुपये हैं और उसमें से तू दा-चार रुपये किसी को दे तो यह क्या त्याग हुआ। त्याग तो वह होता है कि जो चीज़ तेरे पास भी कम है, जिसकी तुझको भी ज़रूरत है तो अपनी ज़रूरत पीछे रखकर दूसरे के कल्याण के लिए उसे दे तो त्याग तो वह होता है' दान तो वह होता है, उसो का फल मिलता है।''

(क) जीजी कुछ देर क्यों चुप रह गई?

(ख) जीजी के अनुसार त्याग स्वरूप क्या है?

(ग) 'बिना त्याग के दान नहीं होता।'
जीजी के इस कथन का उदाहरण देकर आशय स्पष्ट कीजिए।

(घ) जीजी को किस बात के कारण त्याग और दान की बात कहनी पड़ी?

11 निम्नलिखित में से किन्हीं <u>चार</u> प्रश्नों के उत्तर दीजिए– **12**

(क) भक्तिन सेवक-धर्म में हनुमान जी से स्पर्द्धा करने वाली सेविका है– 'भक्तिन' पाठ के आधार पर प्रस्तुत कथन की समीक्षा कीजिए।

(ख) बाज़ारूपन किसे कहते हैं? बाज़ार के जादू से मनुष्य पर क्या प्रभाव पड़ता है?

(ग) 'काले मेघा पानी दे' की जीजी ने 'इन्दर सेना' पर पानी फेंके जाने को किस तरह सही ठहराया?

(घ) पहलवान की ढोलक की छाप मृत गाँव में संजीवनी शक्ति का संचार करती थी– कैसे? पाठ के आधार पर उत्तर दीजिए।

(ङ) 'शिरीष के फूल' के लेखक ने शिरीष को कालजयी अवधूत की तरह क्यों कहा है?

12 निम्नलिखित में से किन्हीं <u>दो</u> प्रश्नों के उत्तर दीजिए– **6**

(क) यशोधर बाबू अपनी पत्नी की भाँति समय के साथ क्यों नहीं ढल सके- 'सिल्वर वैडिंग' के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

(ख) स्वयं कविता रचने का आत्म-विश्वास 'जूझ' कहानी के नायक में कैसे पैदा हुआ? आपको इस उदाहरण से क्या शिक्षा प्राप्त होती है?

(ग) उपयुक्त उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए कि सिंधु घाटी के लोगों में कला या सुरुचि महत्व ज्यादा था।

13 निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए- 4

(क) 'मुअन-जोदड़ो' ताम्र काल के शहरों में सबसे उत्कृष्ट क्यों था? 'अतीत में दबे पाँव' के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

(ख) 'डायरी के पन्ने' के आधार पर 'ऐन फ्रेंक' के प्रकृति-प्रेम को स्पष्ट कीजिए।

(ग) 'जूझ' कहानी के शीर्षक के औचित्य पर संक्षेप में विचार कीजिए।

14 'ऐन फ्रेंक' ने अपनी डायरी में स्त्रियों की पारिवारिक - सामाजिक स्थितियों के सुधार की चर्चा की है। इस प्रकार के सुधार-कार्य में आप क्या योगदान करना चाहेंगे? पाठ के आलोक में स्पष्ट कीजिए। 5

अथवा

'जूझ' कहानी का नायक पढने की लालसा को पूरा करने के लिए हर स्थिति में संघर्ष करता है। इस प्रकार की संघर्षशीलता को अपना आदर्श मानकर सफलता के लिए आप क्या-क्या प्रयास करना चाहेंगे? अपने शब्दों में समझाइए।

आदर्श उत्तर पत्र - 2014

हिन्दी 'केंद्रिक'

कक्षा - XII

समय : 3 घण्टे **अधिकतम अंक : 1००**

खंड- क

1 (क) वैदिक धर्म के यज्ञ में पशु-हिंसा। 15

(ख) यज्ञ में पशु-हिंसा का निराकरण, आसक्ति, ईर्ष्या, द्वेष, भ्रान्ति आदि दुर्गणों का निराकरण, शुभकर्मों का संपादन, कर्म संबन्धी विश्वास, निर्वाण, सामाजिक सुधार आदि के कारण।

(ग) वैदिक और बौद्ध धर्म परंपरा, ब्राह्मण पुरोहिता भ्रमण बौद्ध संन्यासी।

(घ) वैदिक धर्म में सुधार के उपरान्त उसे युगानुकूल रूप बनाकर आधुनिक बनाना।

(ङ) स्वतंत्र, विकसित, पूर्व मान्यताओं से विमुक्त जो अपना दीपक स्वयं हो।

(च) अशान्ति, स्वार्थपरता, आक्रामकता, विनाशमयता, अमानवीयता- अनैतिकता विश्वासघात से उत्पन्न अव्यवस्था।

(छ) मानसिक विकृति, आन्तरिक वेदना, वैचारिक अपवित्रता, हताशा, चिन्ता आदि से उत्पन्न आन्तरिक कष्ट।

(ज) मानवता के हितार्थ, मानवजाति के उद्धार हेतु सर्वदा समर्पित।

(झ) बौद्धधर्म का महत्व/योगदान

(ञ) इत प्रत्यय, सम् उपसर्ग

(ट) वह अपूर्ण को पूर्ण बनाना चाहते थे इसलिए पृथ्वी पर अवतरित हुए।

2 (क) कृषि कार्य के स्थान पर कारखाने बनाए। 5

(ख) हमारी सर्वविद्य उन्नति करें, हमें संपन्न बनाएँ हममें स्नेह-भाव उत्पन्न करें।

(ग) नई सभ्यता और प्रगति के प्रतीक कारखाने सुनसान जंगल बन जाएँगे जहाँ मानव ही अमानव बन जाएगा, क्रूर और स्वार्थी बनकर अपनों को भी नहीं पहचानेगा।

(घ) नई तथा कथित प्रगति का प्रतीक इन्सान आत्मीयता के भाव से हीन होकर अपनों को देखकर कुपित होगा और अपमान भरे शब्दों का प्रयोग करेगा।

(ङ) सुख समृद्धि एवं प्रगति के पर्याय में कारखाने, समाज, राष्ट्र और परिवार में ऊँच-नीच का कारण बनकर पारस्परिक प्रेमभाव को समाप्त कर देंगे।

खंड- ख

3 निबंध लेखन 5

(क) भूमिका/आरंभ

(ख) विषय वस्तु

(ग) उपसंहार

4 पत्र-लेखन 5

(क) प्रारंभ एवं अन्त की औपचारिकताएँ

(ख) विषय वस्तु

(ग) भाषिक प्रस्तुति

5 (क) 5

(1) इंटरनेट

(2) ऐसे तथ्यों की खोज करके सामने लाना जिन्हें दबाने की कोशिश की जाती है।

(3) स्थायित्व, लिखित भाषा का विस्तार, चिंतन, विचार और विश्लेषण का माध्यम

(4) सबसे महत्वपूर्ण तथ्य का सबसे पहले उल्लेख उसके बाद बढ़ते हुए महत्वक्रम में अन्य तथ्यों का उल्लेख। इसके अन्तर्गत समाचार तीन हिस्सों में विभाजित, इंट्रो, बॉडी और समापन।

(5) स्वतंत्र पत्रकार। इसका संबंध किसी किसी खास अखबार से नहीं बल्कि भुगतान के आधार पर अलग-अलग अखबारों के लिए लिखता है।

(ख) आलेख लेखन — आरंभ
विषय वस्तु
निष्कर्ष

विषयवस्तु के अन्तर्गत कथ्य निष्कर्ष की प्रांसगिकता और भाषा शैली पर विशेष ध्यान।

6 (ग) फीचर लेखन- आरंभ - 5
विषयवस्तु -
निष्कर्ष -

7 (क) अवधी, अलंकारमयता 6

(ख) प्रभुपद प्रीति, बाहु बल

(ग) शीलता, प्रभुपद प्रीति

अथवा

(क) लोक भाषा, हिंदी उर्दू का मिश्रित रूप

(ख) वत्सलता की प्रतिमा बच्चे के प्रति

माता का प्यार तथा बच्चे की किलकारी।

(ग) चाँद का टुकड़ा - रूपक

8 (क) क्योंकि कविता फूल की तरह खिलकर कभी भी उसकी तरह मुरझाती नहीं है। 8

(ख) फूल की गन्ध तथा कविता का भाव-प्रभाव सर्वत्र विद्यमान।

(ग) बच्चे के खेल में किसी प्रकार की सीामा का कोई स्थान नहीं। कविता भी शब्दों का खेल है, जिसका क्षेत्र जड़-चेतन अतीत और वर्तमान सर्वत्र है।

(घ) कविता की विशिष्टता है– सार्वकालिक एवं सार्वत्रिक स्थिति।

अथवा

(क) अपने समय की आर्थिक, सामाजिक एवं व्यावसायिक दशाओं का वर्णन किया है।

(ख) कोई पेट के लिए मज़दूरी करता है, भिक्षा माँगता है, शासक और धनिक झूठी प्रशंसा करता है, आदि।

(ग) पेट की आग को बाडवाग्नि से बढ़कर बताया है क्योंकि पेट की आग की शान्ति के लिए मानव को सभी प्रकार के उचित-अनुचित कार्य करने पड़ते हं।

(घ) राम घनश्याम में।

9 किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर– 6

(क) वह दिवंगत माँ, पत्नी, सहचरी कोई भी हो सकती है। सहज स्नेह की ऊष्मा के कारण उसकी उपस्थिति सर्वव्यापी प्रतीत होती है।

(ख) यह कविता सूर्योदय के क्षण के पल-पल परिवर्तित प्रकृति रूपों का शब्द चित्र प्रस्तुत करती है। कवि भोर के आसमान के विभिन्न रूपों को गाँव की सुबह से जोड़ता है। वह आसमान सिल है, राख से लीपा हुआ चौका है....... आदि।

(ग) कागज का एक पन्ना, जिस पर कविता लिखी गई है कवि को एक चोकोर खेत की तरह लगती है। इस खेत में भावात्मक आँधी के प्रभाव से किसी क्षण एक बीज बोया जाता है। यह बीज रचना और विचार का है। वह मूल रूप कल्पना का सहारा लेकर विकसित होता है। इसमें शब्दों के अंकुर निकलते हैं अन्ततः कविता एक पूर्ण रूप ग्रहण करती है। परिमाणतः कविता से अलौकिक रस की धारा फूटती है।

10 गद्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर– 8

(क) जाति के आधार पर श्रमविभाजन के कारण

(ख) क्षमता को विकसित करें, अपना पेशा चुनने का अधिकार दे।

(ग) गर्भ धारण के समय से तथा माता-पिता के सामाजिक स्तर से

(घ) पेशे का निर्धारण जाति से नहीं व्यक्ति की क्षमता और कार्य दक्षता से होना चाहिए।

अथवा

(क) लेखक का यह तर्क सुनने के उपरान्त कि हमारे ऋषि-मुनियों ने दान का महत्व तो बताया है- पर पानी की बूँद-बूँद के लिए तरसने के क्षणों में पानी की बरबादी के लिए नहीं कहा।

(ख) दान त्याग से ही किया जाता है। पर्याप्त धन संपत्ति में से कुछ देना त्याग नहीं, अपनी ज़रूरत को पीछे रखकर पर हितार्थ कुछ देना त्याग है।

(ग) अपनी जरूरतों को कम करके दूसरों की भलाई के विभिन्न कष्ट स्वयं उठाकर कुछ देना।

(घ) इन्दर सेना को पानी देते समय लेखक को पानी देने से इन्कार करने के कारण।

11 किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर- **12**

(क) भक्तिन ने अपनी देहाती ग्राम कला की सरलता से महादेवी जी को इतना मोहित कर दिया कि वे अपनी असुविधाएँ छिपाने की अभ्यस्त हो गई। वह महादेवी जी को अपने मन के अनुसार बना लेती है– जैसे मकई का दलिया, बाजरे तिल लगे पुए, ज्वार की खिचड़ी लेखिका को स्वादिष्ट लगने लगी है वह दुर्गणों से रहित नहीं है, (सत्यवादी हरिशचन्द्र भी नहीं है। इधर-उधर पड़े पैसों को संभालकर रखना उसका स्वभाव उसकी कर्तव्य प्रियता मन को मोहती है। प्रत्येक कार्य में सहायिका, रात-भर लेखिका के साथ जगना, भ्रमण में साथिन, महादेवी के घर में उसका अस्तित्व है उसकी सार्थकता है।

(ख) जो नहीं जानते कि वे क्या चाहते हैं, अपनी 'पर्चेज़िंग पावर' के गर्व में अपने पैसे से केवल विनाशक शक्ति, शैतानी शक्ति, बाजार को देते है यही बाजारूपन है, कपट बढ़ाना सद्भाव घटाना, एक दूसरे को ठगना, दूसरे को हानि पहुँचाकर स्वयं लाभ उठाना। बाज़ार की जादुई ताकत व्यक्तियों को अपना गुलाम बनाती है।

(ग) दीदी इन्दर सेना को पानी देना, पानी की बरबादी नहीं, उसे पानी का अर्ध्य मानती हैं। उनका विश्वास है जो चीज़ मनुष्य पाना चाहता है उसे पहले देगा नहीं तो पाएगा कैसे? इसी कारण ऋषि-मुनियों ने दान का महत्व बताया। दान के लिए त्याग करना पड़ता है।

(घ) पहलवान की ढोलक के बोल गाँव के मृत समान वासियों को भी जिलाए रखते हैं, मौत से लड़ने की शक्ति देते हैं, गाँव की भीषणता को ललकारते हैं, मृत गाँव में संजीवनी का संचार करते हैं, स्पंदन शक्ति शून्य में बिजली दौड़ाते हैं। ढोलक की आवाज औषध तो नहीं है, पर वह मरणासन्न ग्रामवासी को मृत्यु से न डरने का साहस अवश्य देती थी।

(घ) वह पन्द्रह-बीस दिन के लिए नहीं फूलता, वह वसन्त से आषाढ़ तक मस्त बना रहता है, भादों में भी फूलता रहता है- जब उमस से प्राण उबलता रहता है और लू से हृदय सूखता रहता है- उस समय एक मात्र शिरीष कालजयी अव धूल की भांति जीवन की अजेयता का मंत्र प्रचार करता रहता है।

12 किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर– **6**

(क) आधुनिकता के प्रति प्रबल आकर्षण के अभाव के कारण–

- 'जो हुआ होगा' और 'समझाउ इ प्रापद' की अनिर्णयात्मक स्थिति के कारण।
- बदलाव के प्रति अनिच्छा के कारण-

(ख) साहित्य के प्रति अमिट लालसा के कारण

- सौंद लगेकर के प्रभावी ढंग से कविता पढ़ाने के कारण
- अनेक अंग्रेज़ी कविताओं की उनकी कंटस्थता के कारण
- छंद, लय, गति की उनकी जानकारी के कारण।
- उनका अभिनय के साथ कविता पढ़ाना।
- स्वयं खेत पर पानी लगाते समय, ढोर चराते समय खुले गले से मास्टर के हाव-भाव यति-गति के अनुसार गायन के कारण।

(ग) धातु और पत्थर की मूर्तियों, मृद-भांड, उन पर चित्रित मनुष्य, वनस्पति और पशु-पक्षियों की छवियां, सुनिश्चित मुहरें, उन पर उत्कोर्ण आकृतियों, खिलौने, केश-विन्यास आभूषण आदि।

13 किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर- 4

(क) उत्कृष्ठ नगर-नियोजन कला,

- इमारतें, सड़कें, मूर्तियाँ, पात्र, मुहरें
- अपने दौर में घाटी की सभ्यता का केन्द्र राजधानी
- मैदान की संस्कृति

(ख) नीला आसमान, पक्षियों की चहचहाट, खिलती हुई चाँदनी, विकसित कलियाँ- आदि उसको मुग्ध करते हैं, पागल बनाते हैं। गहरी सांवली बरसात की रात, तेज़ हवा, बादलों के बीच चमकती बिजली उसको मंत्र मुग्ध करती है। प्राकृतिक दृश्य उसको शांति और आशा की भावना से सराबोर कर देते हैं।

(ग) पढ़ने की लालसा को पूरा करने के लिए निरन्तर संघर्षशीलता, पारिवारिक स्तर पर सभी दायित्वों के निर्वाह हेतु लगातार कर्मण्यता, विद्यालय में विपरीत परिस्थितियों में भी धैर्य बनाए रखना, खेती का काम करते हुए भी साहित्यिक रुचि को जीवित और विकसित करने हेतु जूझना आदि।

14 परीक्षार्थी का अपना प्रयास, अपनी सोच 5